तकनीकी अनुवाद की चुनौतियाँ - कुछ अनुभव
Challenges in Technical Translation- Some Experiences

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र

Dr. Krishna Kumar Mishra

Associate Professor
Homi Bhabha Centre For Science Education
Tata Institute of Fundamental Research, Mumbai - 400088
असोशिएट प्रोफेसर
होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र,
टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
मुंबई-400088
kkm@hbcse.tifr.res.in

इस संक्षिप्त परचे के जरिये मैं वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों तथा चुनौतियों का जिक्र करना चाहूँगा। मैं इस आलेख में विज्ञान तथा शिक्षा से जुड़ी कठिनाइयों का विशेष करके उल्लेख करना चाहूँगा। इसका मुझे व्यावहारिक अनुभव है क्योंकि मेरी संस्था इसी क्षेत्र में कार्यरत है। होमी भाभा केन्द्र एक ग्रेजुएट स्कूल (Graduate School) संचालित करता है जिसमें छात्रों को अनुसंधानोपरान्त 'विज्ञान शिक्षा' में पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की जाती है। यहां जो ग्रेजुएट शब्द है वह स्नातक से नितांत भिन्न है। इसलिए हमें ग्रेजुएट स्कूल के लिए स्नातक विद्यालय या स्नातक स्कूल लिखने से परहेज करने की जरूरत है। एक शब्द आता है, डीम्ड यूनिवर्सिटी, जिसके लिए कई शब्द इस समय प्रचलन में हैं। इसके लिए मानकीकृत शब्द शायद बन नहीं सका, या फिर उतना प्रचलित ही नहीं हो पाया है। कहीं कोई सम-विश्वविद्यालय लिखता है, तो कोई मान्य विश्वविद्यालय। कुछ लोग समतुल्य विश्वविद्यालय भी लिखते हैं। इसीलिए बहुत से लोग अकसर धर्मसंकट से बचने के लिए देवनागरी में सीधे-सीधे डीम्ड यूनिवर्सिटी ही लिख देते हैं। विश्वविद्यालय में आने वाले छात्रें का प्रोफाइल अलग-अलग होता है। प्रोफाइल के लिए वास्तव में किसी सुपरिचित शब्द का बहुत अभाव है। रही बात विज्ञान शिक्षा में शोध करके डॉक्टरेट प्राप्त करके Career बनाने की, तो फिलहाल कैरियर शब्द से ही काम चलाया जा रहा है। इसका कोई हिन्दी पर्याय फिलहाल नहीं मिल सका है।

शिक्षा की बात हो तो बेसिक (Basic) शिक्षा से ही होकर आगे की तरफ सीढ़ियां जाती हैं। लेकिन बेसिक को हमने हिन्दी में ज्यों का त्यों अपना लिया है। इसका कोई सटीक हिन्दी शब्द मिल नहीं सकाए या आज तक स्थापित नहीं हो पाया है। इसीलिए हिन्दी प्रांतों में बेसिक शिक्षा परिषद् है तथा उससे संचालित होने वाले बेसिक प्राइमरी स्कूल हैं। मिडिल भी अपनी जगह कायम है। पोस्ट प्राइमरी, विशेष करके 6 से 8 तक की कक्षाओं के लिए मिडिल ही लोकप्रिय है। बोर्ड शब्द भी हिन्दी में कोई शब्द नहीं प्राप्त कर सका है। इसलिए तमाम प्रान्तों के शिक्षा बोर्ड हैं। शिक्षा की स्थिति को सुधारने के लिए तमाम तरीके से कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन्हें इंटरवेंशन प्रोग्राम कहा जाता है। इंटरवेंशन को वैसे दखल कह सकते हैं, लेकिन हिन्दी में दखल शब्द एक तरह का नकारात्मक या निषेधात्मक भाव रखता है। जबकि इंटरवेंशन सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों, हो सकते हैं।

शिक्षा की औपचारिक शुरुआत नर्सरी से होती है। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में इसे रेखांकित किया गया है। नर्सरी के लिए फिलहाल नर्सरी शब्द ही बहुतायत से चल रहा है। दूसरा कोई शब्द फिलहाल अपना स्थान हासिल नहीं कर सका है। शिक्षा में शोध, विकास के साथ इनोवेशन (Innovation) की भी बड़ी भूमिका होती है। आज के युग में इनोवेशन पर बहुत जोर है। हिन्दी में इनोवेशन के लिए कई शब्द समान्तर चल रहे हैं। नवाचारए नव-प्रवर्तन, तथा नवोन्मेष प्रचलित हैं। लेकिन आज की तारीख में इनमें नवाचार थोड़ा भारी पड़ता प्रतीत हो रहा है। बाकी के दोनों शब्द भी साथ-साथ चल रहे हैं। समय ही इसका फैसला करेगा कि कौन बचेगा, कौन मिटेगा। एक समय था कि कंप्यूटर के लिए संगणक शब्द का चलन शुरू था। लेकिन दो दशकों में कंप्यूटर भारी पड़ा। संगणक समय के साथ हाशिये पर चला गया, तथा भाषायी परिदृश्य से करीब-करीब गायब हो गया, चंद शुद्धतावादियों के आग्रहों को छोड़कर। तमाम शब्दों के साथ भी ऐसा होता है। समय के साथ शब्द विलोपन की कगार पर पहुंच जाते हैं, घिस-पिट जाते हैं, कुछ तो अपना मूल अर्थ तक खो देते हैं।

अब कुछ ऐसे शब्द लेते हैं जो शिक्षा या फिर किसी भी कार्यक्रम की रीढ़ होते हैं। इसमें विचारकों/चिंतकों की दूर दृष्टि समाहित होती है। प्रायः इसे विजन (Vision) कहा जाता है। लेकिन आंग्ल भाषा के विजन का सटीक हिन्दी शब्द नहीं मिल सका है। या फिर दूसरा कोई अन्य शब्द इस तरह प्रचलित नहीं हो सका है जो उस अर्थ को प्रकट करता हो। उसी तरह महत्वाकांक्षी परियोजनाओं को मिशन (Mission) के तौर पर लेने की जरूरत पड़ती है तभी उसमें वांछित सफलता मिलती है। उदाहरण के तौर पर भारत सरकार के जल जीवन मिशन का उल्लेख किया जा सकता है। अभी तक अंग्रेजी के मिशन का हिन्दी शब्द या तो मिला नहीं, या फिर वह प्रचलित नहीं हो सका। इसलिए हिन्दी में भी मिशन ही चल रहा है। मिशन को हासिल करने के लिए Active होना जरूरी है। यदि Proactive अर्थात अग्रसक्रिय हों तो और अच्छा। आखिर पहले से ही सक्रिय या क्रियाशील होने से ही अच्छी सफलता मिल सकती है। तमाम लोग पर्यावरण तथा मानवाधिकार के मुद्दों को लेकर हमेशा मुहिम-सी छेड़े रहते हैं। इन्हें मीडिया वाले Activist कहते हैं। इसका हिन्दी पर्याय फिलहाल अप्राप्य है। ये ऐक्टिविस्ट मानते हैं कि विकास समतामूलक हो, सभी के लिए लाभकारी हो, किसी वर्ग विशेष की कीमत पर हासिल न हो। इसलिए विकास परियोजनाओं पर वे बारीक नजर रखते हैं। साथ ही विकास का sustainable होना जरूरी है। अर्थात वह टिकाऊ हो, धारणीय हो। लेकिन सस्टेनेबल के लिए टिकाऊ शब्द समाचार माध्यमों तथा सोशल मीडिया में टिका हुआ है। जबकि पारिभाषिक कोशों में धारणीय शब्द दिया गया है। जाहिर है, पहले वाला ज्यादा लोकप्रिय हो चला है।

शिक्षा में सीखने पर बल दिया जाता है। इसे हम Learning कहते हैं। तकनीकी तौर पर इसे हिन्दी में अधिगम कहा जाता है। शिक्षण में यदि अधिगम न हो तो फिर उसका क्या फायदा। इसी को ध्यान में रखते हुए Learning Units तैयार की जाती हैं। इन्हें अधिगम इकाइयां कहा जा सकता है, या फिर शैक्षणिक इकाइयां। सबसे सरल है 'पाठ' कहना। पहले की किताबों में पाठ होते थे। सीखने में कुछ बाधाएँ होती हैं जिन्हें Learning barriers कहा जाता है। भाषा भी उसी तरह की एक बाधा है। लेकिन लर्निंग बैरियर के लिए कोई हिन्दी शब्द शायद ही मिले। शैक्षिक कार्यक्रमों में Outreach की बड़ी भूमिका मानी जाती है जब कोई संस्था या व्यक्ति, जरूरतमंदों/लक्ष्यवर्ग तक अपने साधन/विचार लेकर जाता है। इस आउटरीच को हिन्दी में क्या कहा जाए? किसी संस्था के तमाम कार्यक्रमों के मध्य परस्पर तालमेल भी जरूरी होता है जिससे वे एक दूसरे को पोषित करें, समृद्ध करें, परस्पर मददगार साबित हों। इनके मध्य एक Synergy का होना जरूरी माना जाता है। सिनर्जी के लिए शब्द फिलहाल सहक्रियता हैए जो अजनबी-सा ही प्रतीत होता है। शैक्षिक अध्ययन/शोध में किसी प्रकरण को लेकर सर्वेक्षण या वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाता है। इसे Case study कहा जाता है। इस केस स्टडी के लिए हिन्दी में कोई निकटार्थी शब्द-युग्म नहीं मिलता है।

शैक्षिक जगत में काम करते हुए मैंने देखा है कि अभी भी अंग्रेजी के तमाम शब्दों के लिए हिन्दी शब्द

मिलने कठिन हो जाते हैं। इसलिए उन्हें जस का तस देवनागरी में लिखकर काम चला लेना पड़ता है। इनसे काम चल भी जाता है। आखिर भाषा संप्रेषण का ही जरिया है। यदि विदेशी भाषा के शब्द से काम चलता है तो भी ठीक है। आखिर हिन्दी ने अंग्रेजी, अरबी, फारसी, उर्दू, पुर्तगाली, चीनी, तुर्की, से तमाम शब्द लिये ही हैं। वे शब्द अब तो इतने आमफहम हो चले हैं तथा भाषा में रच बस ही नहीं गये है, बल्कि इस तरह पचा लिये गये है कि हमें पता ही नहीं चलता कि वे बाहर से आये हैं। इन तमाम शब्दों पर एक विस्तृत विनिबन्ध हो सकता है। एक कहावत है, भाषा बहता नीर। इसे अविरलए प्रवाहमान रहना है। समय के साथ यात्र में इसे चलते रहना है विविध रूपाकारों के साथ। अस्तु, चरैवेति, चरैवेति।

तकनीकी शब्द

आंग्ल शब्द	**हिन्दी समतुल्य**
Learning	अधिगम, सीखना
Graduate school	ग्रेजुएट स्कूल
Deemed University	डीम्ड यूनिवर्सिटी, सम-विश्वविद्यालय, समतुल्य विश्वविद्यालय, मान्य विश्वविद्यालय
Vision	विजनए दृष्टि
Vision document	दृष्टि-पत्र
Mission	मिशन
Synergy	सहक्रियता
Outreach	आउटरीच
Innovation	नवाचार, नवोन्मेष, नवप्रवर्तन
Case study	केस स्टडी
Sustainable	धारणीय, टिकाऊ
Basic	बेसिक
Board	बोर्ड
Middle	मिडिल
Nursery	नर्सरी
Activist	ऐक्टिविस्ट
Proactive	अग्रसक्रिय, प्रोऐक्टिव
Computer	कंप्यूटर, संगणक

किसी समाज का पर्यावरण पहले बिगड़ना शुरू होता है या उसकी भाषा- हम इसे समझ कर संभल सकने के दौर से अभी तो आगे बढ़ गए हैं। हम 'विकसित' हो गए हैं। भाषा यानी केवल जीभ नहीं। भाषा यानी मन और माथा भी। एक का नहीं, एक बड़े समुदाय का मन और माथा जो अपने आसपास के और दूर के भी संसार को देखने-परखने-बरतने का संस्कार अपने में सहज संजो लेता है। ये संस्कार बहुत कुछ उस समाज की मिट्टी, पानी, हवा में अंकुरित होते हैं, पलते-बढ़ते हैं और यदि उसमें से कुछ मुरझाते भी हैं तो उनकी सूखी पत्तियां वहीं गिरती हैं, उसी मिट्टी में खाद बनाती हैं। इस खाद यानी असफलता की ठोकरों के अनुभव से भी समाज नया कुछ सीखता है।

- अनुपम मिश्र (1948-2016), भाषा और पर्यावरण, निबन्ध से